ISSN : 2583-2948

कोई क्यों लिखता है कविता

अनुपमा तिवाड़ी
शिक्षक प्रशिक्षक, अज़ीम प्रेमजी
फाउंडेशन, जयपुर, राजस्थान
मो – 917742191212

कि, मैं क्यों लिखती हूँ कविता?

कविता ने ही सिखाया

उगते सूरज से ही नहीं,

स्लेटी रूई के फाहों जैसे बादलों के पीछे ढलते सूरज से भी प्यार करना

कविता ने ही सिखाया,

चिड़ियों को शुभकामनाएं देना

कि चिड़ियों, तुम उड़ो उन्मुक्त आकाश में,

अनंत काल तक,

तुम इतनी ही खुश रहना,

जितनी कि आज हो।

कविता ने ही उगते पेड़ों को देख,

जीवन में संभावनाएं देखना सिखाया

कभी कविता पैदा हुई,

बाहरी पीड़ा के प्रसव से

तो कभी,

भीतर बह रहे झरने की झर – झर से,

जब कभी मन हारा

तो कविता ही सिरहाने आ,

झिंझोड़कर बोली

“पागल समूचा समाज एक हो जाता है

ISSN : 2583-2948

तो क्या सुकरात गलत हो जाता है?

क्या ईसा गलत हो जाता है?

कविता है, तो तू है

कविता नहीं, तो तू भी नहीं !

यूँ ही नहीं लिखता कोई कविता

यूँ ही नहीं लिखता कोई कविता .....